गजब है उसकी ज़िन्दगी जीना , दुनियाँ के लिए टूटी – फूटी वह एक बेरंग हीना....

साहित्यकार पत्रकार समीक्षक – लक्ष्मी नारायण लहरे साहिल

एक व्यक्ति अपने समय में कई भूमिकाएं निभाता है और अपने जीवन की अवस्थाएं को एक रंग मंच की तरह जीता है ।

जनकवि नीलम आदित्य का जन्म सांस्कृतिक नगरी कोसीर में 14 नवंबर 1966 को हुई ।उनके पिता का नाम बिल्ठी राम आदित्य और माता का नाम चमारिन बाई आदित्य है ।

नीलम आदित्य की प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई वहीं उच्च शिक्षा उन्होंने कला नगरी रायगढ़ में अर्थ शास्त्र में एम ए की । शिक्षा ग्रहण करते हुए वे साहित्य सृजन भी करने लगे साहित्य सृजन में साहित्यकार बनवारी लाल देवांगन रायगढ़ का मार्गदर्शन मिला वे 1989 में रायगढ़ में कॉलेज की पढ़ाई करते हुए रायगढ़ शहर के स्थानीय समाचार पत्र रायगढ़ संदेश में कंपोजिंग करते हुए अपना समय दिए और कवि के रूप में रायगढ़ संदेश ,जनकर्म , केलो प्रवाह में छपते रहे ।पढ़ाई के बाद वे अपने गांव वापस लौट कर गांव के सरकारी स्कूल बेड़िझर पारा स्कूल में भी सेवाएं दिए उनके साथ उस समय द्रोण गुरु और फिरत बनज भी छोटे बच्चों को पढ़ा रहे थे । गांव में सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल की स्थापना किए 1090 से 2005 तक 10 वर्ष से अधिक समय तक संस्थापक प्राचार्य के रूप में सेवा दिए ।अपने समय के वे रंगकर्मी भी रहे गांव में उस समय कृष्ण लीला नाटक का मंचन होता था तो वे कृष्ण भगवान की पाठ करते थे ।

साहित्य के प्रति उनका कॉलेज के शिक्षा के समय से ही लगाव रहा वे स्थानीय समाचार पत्र में छपते रहे ।

उनके पिता उन्हें शिक्षक के रूप में देखना चाहते थे पर सरकारी नौकरी नहीं लगी पर वे पिछले 03 दशक से अपने गांव में छोटे छोटे बच्चों को घर जा जाकर पढ़ते रहे ।पिछले एक दशक में नयोदय विद्यालय चयन परीक्षा के लिए बच्चों का मार्गदर्शन कर पढ़ाते रहे और उनके पढ़ाए हुए 75 से अधिक बच्चों का विद्यालय में चयन हुआ यह उनकी एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है ।

विश्व रंग मंच दिवस पर जनकवि नीलम आदित्य से उनके साहित्य सृजन को लेकर हुई मेरे साथ चर्चा के कुछ खास अंश - नीलम आदित्य कहते हैं कि मैं अब अपनी 60 वें वर्ष की ओर बढ़ रहा हूं मेरे जीवन में बहुत सारे विषम परिस्थितियां आएं और हंस कर मैने जिया । एक शिक्षक के रूप में रंगकर्मी के रूप में और सामाजिक कार्यकर्ता के साथ साथ साहित्य सृजन करता रहा स्थानीय कवि सम्मेलनों में भी कविता पाठ किया पद्मश्री श्यामलाल चतुर्वेदी जी के भी साथ कविता पाठ करने का मौका मिला था । मेरी कविताओं में गांव की मिट्टी की महक है आम ज़िंदगी की जज्बात छुये हैं 100 से अधिक रचनाएं समाचार पत्रों में छप गए हैं गांव में रहने के कारण मंच का अभाव हमेशा बना रहा ।मेरी पांडुलिपि अब तक प्रकाशित नहीं करा पाया ।नीलम आदित्य के साथ मेरा भी उठना बैठना या यूं कहें याराना मेरे स्कूल शिक्षा समय से उनके एक साथ मंच साझा किए हैं ।जनकवि नीलम आदित्य की कविताओं में आम लोगों की जज्बात जुड़ी है उनकी एक कविता -आदिवासी औरत गजब है उनकी ज़िन्दगी का जीना , दुनियां के लिए टूटी -फूटी वह एक बेरंग हीना वह एक आदिवासी औरत कंपकंपाती ठंड लपलपाती लू से टकराती , सराई के पत्ते तोड़कर दोना पत्तल बनाती गोंद, चार ,महुआ बिनती जामुन ,तेंदू , बेर,लकड़ी ,दातोंन लघु वनोपज गांव से शहर तक पहुंचाती नन्हे बच्चे को पीठ में बांधकर उसकी भूख का रखते हुए ख्याल गजब है उसकी ज़िन्दगी का जीना वह है एक बेरंग हीना ।लक्ष्मी नारायण लहरे साहिल

साहित्यकार ,पत्रकार ,समीक्षक गांव /डाकघर – कोसीर
सारंगढ़ जिला ;सारंगढ़ – बिलाईगढ़ छत्तीसगढ़

शबरी की प्रतीक्षा

हम सभी रामायण में शबरी की कथा सुनते हैं. नवधा भक्ति के वर्णन के समय भी माता शबरी का जिक्र होता है. गोस्वामी तुलसीदासजी माता शबरी में सभी प्रकार की भक्ति का उल्लेख करते हैं. वास्तव में शबरी का हृदय अत्यंत कोमल और करुणा से भरा हुआ था। उनके जीवन की कहानी, खासकर मातंग ऋषि के आश्रम में उनके आगमन की कथा, बहुत ही प्रेरणादायक और रोचक है। शबरी के माता-पिता ने उनका विवाह तय किया था। आदिवासियों की परंपरा के अनुसार, विवाह से एक दिन पहले देवी को प्रसन्न करने के लिए एक बकरी की बलि चढ़ाई जाती थी। जब शबरी को यह बात पता चली, तो उनका हृदय द्रवित हो उठा। उन्होंने रोते हुए अपने माता-पिता के चरणों में गिरकर प्रार्थना की, ÷हमारा दांपत्य जीवन कैसे सुखमय हो सकता है, जब यह बकरी अपनी अंतिम चीखों से हमारी शादी का आरंभ करेगी?÷ लेकिन उनके पिता ने उनकी प्रार्थना को अनसुना कर दिया और बलि की तैयारी करने लगे। उस रात शबरी अपने माता-पिता और समाज की क्रूरता से दुखी होकर घर से भाग गईं और जंगल की ओर चली गईं। सुबह होते ही शबरी के माता-पिता और वर पक्ष के लोग शबरी को ढूंढने के लिए जंगल में गए। वे झाड़ियों के पास से गुजरे, लेकिन उसे नहीं देखा। उन्होंने कहा, ÷वह आश्रम तो नहीं गई होगी, क्योंकि कोई स्त्री वहां शरण नहीं पा सकती।÷ शबरी ने उनकी बात सुन ली और समझ गई कि यही जगह उनके लिए सबसे सुरक्षित है। आश्रम पहुंचने पर मातंग ऋषि ने शबरी को देखा और उसे आश्रय दिया। उन्होंने कहा, ÷तुम यहां रह सकती हो।÷ मातंग ऋषि ने शबरी को बताया कि भगवान श्रीराम अपने वनवास के दौरान किसी दिन इस आश्रम में आएंगे। वे जंगल में तपस्वियों की रक्षा करने के लिए घूम रहे हैं, क्योंकि राक्षस उनके तपोवन को नष्ट कर रहे हैं। यह सुनने के बाद शबरी का जीवन केवल राम के लिए समर्पित हो गया। उनके हृदय में राम के प्रति भक्ति का ऐसा रस उमड़ पड़ा कि उन्हें केवल राम के दर्शन, उनके चरण स्पर्श और उनसे कुछ शब्द सुनने की लालसा थी। उन्होंने राम के स्वागत की तैयारी शुरू कर दी। शबरी ने रोज़ जंगल की पगडंडियों को साफ किया। जैसे वे रास्तों से कंकड़ और काटे हटाती थीं, वैसे ही उन्होंने अपने हृदय को भी निर्मल किया। उन्होंने पथ के हर बड़े पत्थर और मिट्टी के ढेले को समतल कर दिया, ताकि सीता जी के कोमल चरणों को कष्ट न हो। वे राम, लक्ष्मण और सीता के विश्राम के लिए जंगल के पत्थरों को भी चमकाने लगीं। शबरी जंगल के फल-फूल इकट्ठा करतीं और हर फल को चखकर देखतीं कि वह मीठा है या नहीं। वह राम को केवल सर्वोत्तम फल ही अर्पित करना चाहती थीं। उनका संपूर्ण जीवन राम की प्रतीक्षा में बदल गया। उनकी भक्ति इतनी प्रबल थी कि आश्रम के अन्य साधुओं ने यह भी भूल गया कि वह एक स्त्री हैं। मातंग ऋषि ने भी उन्हें आशीर्वाद देकर कहा, ÷तुम ही राम के स्वागत के लिए इस आश्रम में रहने के योग्य हो।÷ उन्होंने अपने शरीर को त्यागते समय कहा, ÷राम अवश्य आएंगे, और तुम्हारी भक्ति का फल तुम्हें मिलेगा।÷ आखिरकार, भगवान श्रीराम लक्ष्मण के साथ आश्रम आए। शबरी ने उनकी आराधना की और अपने जीवन की सबसे बड़ी इच्छा पूरी की। राम ने शबरी की भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें मोक्ष का वरदान दिया। शबरी की यह कथा सिखाती है कि सच्ची भक्ति और सेवा में इतनी शक्ति होती है कि वह ईश्वर को भी अपनी ओर आकर्षित कर सकती है।

आनंद मोहन मिश्रअरुणाचल प्रदेशदूरभाष – 9436870174

रंग का दाग ;समाज की काली सच्चाई पर शारदा मुरलीधरन का करारा जवाब

रंग से नहीं, काबिलियत से तय होती है पहचान

रंग–एक ऐसा शब्द, जो सिर्फ चमक या छाया नहीं, बल्कि समाज की गहरी दरारों का प्रतीक बन चुका है। यह वह जहरीला बीज है, जो सदियों से भारतीय समाज की मिट्टी में बोया गया और आज भी इसकी जहरीली फसल हमारे आत्मसम्मान को लील रही है। खासकर महिलाएँ–जिनकी पहचान, योग्यता और सपनों को रंग के इस पैमाने पर तौला जाता है। यह शर्मिंदगी की बात है कि आधुनिकता का ढिंढोरा पीटने वाला हमारा समाज आज भी गोरे और काले के भेद में उलझा हुआ है। लेकिन इस अंधेरे में एक चिंगारी जली–केरल की पहली महिला मुख्य सचिव शारदा मुरलीधरन ने रंगभेद की इस कुत्सित मानसिकता पर ऐसा प्रहार किया कि समाज का चेहरा शर्म से झुक गया। उनके साहस ने न सिर्फ एक बहस छेड़ी, बल्कि यह साबित कर दिया कि सफलता का कोई रंग नहीं होता–वह तो मेहनत, आत्मविश्वास और काबिलियत का प्रकाश है।शारदा मुरलीधरन ने हाल ही में सोशल मीडिया पर अपने जीवन की कड़वी सच्चाइयाँ उजागर कीं। उनके सांवले रंग को बचपन से ही निशाना बनाया गया। ताने, कटाक्ष और अपमान उनके जीवन का हिस्सा बन गए थे। समाज ने उनके रंग को उनकी पहचान से बड़ा बना दिया, उनकी प्रतिभा को कुचलने की कोशिश की। लेकिन शारदा ने हार नहीं मानी। मेहनत और लगन से उन्होंने न सिर्फ ऊँचा मुकाम हासिल किया, बल्कि केरल की मुख्य सचिव बनकर इतिहास रच दिया। मगर समाज की संकीर्ण सोच यहाँ भी पीछे नहीं हटी। एक शख्स ने उनकी कार्यशैली की तुलना उनके पति से करते हुए बेहूदा टिप्पणी की– ÷वह उतनी ही काली हैं, जितना उनके पति गोरे थे।÷ यह टिप्पणी सिर्फ एक शब्द नहीं थी–यह समाज की उस गहरी बीमारी का लक्षण थी, जो रंग को इंसान की कीमत का पैमाना मानती है।लेकिन शारदा ने इस अपमान का जवाब ऐसा दिया कि समाज की नींद उड़ गई। उन्होंने बुलंद आवाज में कहा, ÷मुझे मेरा रंग पसंद है। मुझे इस पर गर्व है।÷ यह जवाब सिर्फ उस शख्स के लिए नहीं था–यह हर उस सोच को चुनौती थी जो गोरे रंग को सुंदरता का ताज पहनाती है और सांवले रंग को अपमान की गहराई में धकेलती है। शारदा ने साफ कर दिया कि असली सुंदरता रंग में नहीं, आत्मविश्वास और प्रतिभा में बसती है। उनकी यह प्रतिक्रिया एक तूफान बन गई–जिसने समाज की चुप्पी को तोड़ा और रंगभेद के खिलाफ एक नई जंग की शुरुआत की।यह सवाल अब हर जुबान पर है–आखिर क्यों गोरे रंग को ही श्रेष्ठता का पर्याय माना जाता है? क्यों

सांवले रंग को हीनता की नजर से देखा जाता है? शारदा मुरलीधरन की यह बेबाकी उन लाखों महिलाओं के लिए मशाल बन गई, जो अपने रंग-रूप के कारण खुद को कमतर समझती हैं। उनकी आवाज ने समाज को आईना दिखाया और बदलाव की एक उम्मीद जगाई। यह सिर्फ एक महिला की कहानी नहीं है–यह उस दर्द की पुकार है, जो हर सांवली लड़की ने कभी न कभी महसूस किया है। यह उस संघर्ष की गाथा है, जो हर उस इंसान ने जिया है, जिसे उसके रंग के कारण हाशिए पर धकेल दिया गया।भारतीय समाज में रंगभेद की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वे हमारी संस्कृति का हिस्सा बन चुकी हैं। बचपन से ही बच्चों के दिमाग में यह बात ठूँस दी जाती है कि गोरा रंग ही सुंदरता का प्रतीक है। टेलीविजन पर विज्ञापन हों या फिल्मों के गीत–हर जगह गोरे रंग को महिमामंडित किया जाता है। ÷फेयर एंड लवली÷ जैसी क्रीम्स की बिक्री इस सोच को और हवा देती है। शादी-विवाह में यह भेदभाव अपने चरम पर पहुँच जाता है। ÷गोरी बहू÷ की माँग आज भी हर परिवार की पहली शर्त होती है। सांवले रंग की लड़कियों को न सिर्फ अपमान सहना पड़ता है, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी कुचल दिया जाता है। यह एक ऐसी सजा है, जो बिना जुर्म के दी जाती है।महिलाओं के लिए यह भेदभाव और भी क्रूर हो जाता है। चाहे वे कितना भी पढ़-लिख लें, कितना भी बड़ा मुकाम हासिल कर लें, उनकी पहचान उनके रंग से जोड़ दी जाती है। शारदा मुरलीधरन इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। उन्होंने अपनी मेहनत और काबिलियत से एक ऊँचा पद हासिल किया, लेकिन समाज ने उनकी सफलता को उनके रंग के चश्मे से देखा। यह सिर्फ उनकी कहानी नहीं है–यह हर उस महिला की कहानी है, जिसे उसके रंग के कारण जज किया गया। यह उस मानसिकता का सबूत है, जो योग्यता को रंग के तराजू पर तौलती है।लेकिन शारदा ने इस सोच को ललकारा। उनकी प्रतिक्रिया ने समाज को झकझोर कर रख दिया। उन्होंने दिखाया कि रंग कोई बाधा नहीं है–यह तो एक पहचान है, जिसे गर्व से अपनाया जा सकता है। उनकी इस हिम्मत ने न सिर्फ रंगभेद के खिलाफ जंग छेड़ी, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव की नींव भी रखी। सोशल मीडिया पर उनकी बात को जबरदस्त समर्थन मिला। हजारों महिलाओं ने अपने अनुभव साझा किए–कोई अपने बचपन के तानों को याद कर रो पड़ी, तो किसी ने शादी में रिजेक्शन की पीड़ा बयाँ की। यह एक सामूहिक आवाज बन गई, जो रंगभेद के खिलाफ खड़ी हो गई। सरकार की ओर से भी इस मुद्दे पर सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। लोग अब खुलकर इस पर बात करने लगे हैं–यह बदलाव की पहली किरण है।शारदा मुरलीधरन का यह साहस उन लाखों महिलाओं के लिए प्रेरणा है, जो अपने रंग-रूप को लेकर हीन भावना से जूझती हैं। उन्होंने साबित किया कि सुंदरता का असली मापदंड रंग नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, मेहनत और व्यक्तित्व है। समाज को इस संकीर्ण सोच से बाहर निकलना होगा। गोरे रंग को श्रेष्ठता का तमगा देना बंद करना होगा। शिक्षा और जागरूकता ही इस बीमारी का इलाज है। स्कूलों में बच्चों को यह सिखाना होगा कि हर रंग खूबसूरत है। माता-पिता को अपनी बेटियों को यह भरोसा देना होगा कि उनकी कीमत उनके रंग से नहीं, उनकी काबिलियत से तय होती है।यह घटना इस बात का सबूत है कि समाज में बदलाव की शुरुआत हो चुकी है। लोग अब रंग-रूप से परे जाकर इंसान की योग्यता को महत्व देने लगे हैं। शारदा मुरलीधरन ने समाज को एक अनमोल सबक सिखाया–सफलता का कोई रंग नहीं होता। वह मेहनत की रोशनी से चमकती है, आत्मविश्वास की ताकत से खिलती है और काबिलियत के बल पर दुनिया को अपनी ओर मोड़ती है। उनका साहस और उनकी स्पष्टता आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मिसाल है। यह एक ऐसी मशाल है, जो रंगभेद के अंधेरे को चीरकर आत्मसम्मान और समानता का उजाला फैलाएगी।शारदा की कहानी महज एक महिला की जीत नहीं है–यह हर उस इंसान का विजय गान है, जिसने अपने रंग के कारण अपमान के कांटे झेले, जिसकी आत्मा को रंगभेद की आग में जलाया गया। यह एक नई सुबह का आलोक है–वह सुबह, जहाँ रंग सिर्फ देह की सतह पर एक रेखा होगा, न कि इंसान की कीमत का वह क्रूर तराजू, जो सदियों से हमें तोलता आया है। अब समाज को नींद से जागना होगा, अपनी संकीर्ण सोच के बंधनों को तोड़ना होगा और यह गहरे तक मानना होगा कि असली सुंदरता रंग की परतों में नहीं, बल्कि दिल की गहराई में, दिमाग की उड़ान में और आत्मा की शक्ति में बसती है।

प्रो. आरके जैन , बड़वानी (मप्र)

सूजी के लडु

सूजी के लड्डू बनाने के लिए सामग्री

1.कप सूजी (पतली वाली)
1.कप चीनी
1/2 कप नारियल का बुरादा
1/2/ कप पानी
2 बड़े चम्मच घी
1 चम्मच टूटी फ्रूटी
2 इलायची कुटी हुई
10 से 12 किसमिस
5 काजू के कतरन
2 बादाम के कतरन

ड्राई फ्रूट्स अपनी स्वाद के अनुसार डालें

सूजी के लड्डू बनाने की विधि-

सबसे पहले गैस आन करके उस पर एक कड़ाही रखें और उस में घी डालकर गरम करें फिर आंच को धीमी करके कढ़ाई में सूजी डाल कर लगातार चलाते हुए घी और सूजी को सुनहरा होने तक भून लें फिर नारियल का बुरादा डाल कर दो मिनट के लिए और भून लें अब सूजी को किसी थाली या प्लेट में निकाल कर ठंडा होने के लिए अलग रख दें। फिर एक कड़ाही में चीनी और पानी डाल कर एक तार की चाशनी बना लें और इस गरम गरम चाशनी को ठंडी हो रही सूजी में डाल दें (ध्यान रहें सूजी ठंडी और चाशनी गरम होनी चाहिए)और बहुत ही अच्छी तरह से मिला ले। और फिर इस मिश्रण को फूलने के लिए एक घंटे के लिए ढक कर रख दें। एक घंटे बाद पुनः एक बार सूजी को अच्छी तरह से मिला ले और उसमें अपनी इच्छा अनुसार ड्राई फ्रूट्स और इलायची डालकर लड्डू बना लें या फिर ऊपर दिए गए विवरण के अनुरूप ड्राई फ्रूट्स डाल कर लड्डू बांध ले...!!

सूजी से बना यह लड्डू खाने में इतना स्वादिष्ट होता है कि

एक लड्डू खाने के बाद हाथ रुकने का नाम ही लेता है।

जी करता है खाते ही जाए बस खाते ही जाए।अब देखिए ना हमने पंद्रह लड्डू बनाएं और एक ही दिन में सफाचट हो गये। ये सूजी से बना लड्डू मैंने बचपन में एक बार खाया था। जो मुझे बहुत पसंद आया था। तब से लेकर आज तक ये कहीं खो गया था। ये लड्डू मुझे किसी की याद दिलाता है। शायद उनकी जिन्होने हमें पहली बार ये लड्डू खिलाया था। हमें इस लड्डू से अवगत कराया था।इस लड्डू का स्वाद चखाया था। आज जब किसी के स्टेटस पर इस लड्डू की तस्वीर को देखा तो मुझ से रहा नहीं गया और मैंने फटाफट से इस स्वादिष्ट लड्डू को बना लिया। सूजी का लड्डू बनाना लगभग सभी मिठाइयों में सबसे आसान हैं।? ये बहुत जल्दी बन जाती है और रसोई में उपलब्ध समानों से ही बन जाती है। तो जब भी कुछ मीठा खाने का मन करें,झटपट सूजी का लड्डू बना कर खा लें।।

किरण काजल बेंगलुरु

श्री राधा कृष्ण मंदिर से गणगौर माता का धूमधाम से बाना निकाला

आष्टा। नगर में बुधवार की शाम को श्रीराधाकृष्ण स्वर्णकार मंदिर से श्री मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज की महिलाओं ने गणगौर माता जी का बाना आलौकिक स्वरूप में गाजे बाजे के साथ नगर के प्रमुख मार्गो से निकाला गया। स्वर्णकार समाज की महिलाओं ने इस गणगौर के बाने में बढ़ -चढ़कर उत्साह पूर्वक भाग लिया और पारंपरिक वेशभूषा में बाने की शोभा बढ़ाई। प्रति वर्ष अनुसार इस वर्ष भी श्री मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज की महिलाओं ने अपने समाज के श्री राधाकृष्ण मंदिर बड़ा बाजार से शाम के समय गणगौर माता का बाना निकाला। बैंड -बाजा की धुन पर महिलाओं ने गणगौर माता के झाले किए। गणगौर माता का बाना नगर के प्रमुख मार्गो से होता हुआ वापिस बड़ा बाजार स्थित श्री राधाकृष्ण मंदिर पर पहुंचा।इस अवसर पर दूल्हा- दुल्हन की रस्में भी की गई। इस बाने में शामिल महिलाओं ने राजस्थानी और मारवाड़ी परिधान पहने थे ।पारंपरिक गीतों पर आकर्षक नृत्य भी किए।

बेसिलिक फ्लाई स्टूडियो ; 301 करोड़ की ग्रोथ पाइपलाइन और नई तकनीकों के साथ तेज वैश्विक विस्तार

मुंबई, बेसिलिक फ्लाई स्टूडियो लिमिटेड , जो प्रमुख विजुअल इफेक्ट्स स्टूडियो में से एक है, अपने विकास को जारी रखते हुए ?301.3 करोड़ (27.9 मिलियन) की मजबूत बिक्री पाइपलाइन के साथ आगे बढ़ रहा है, जो अक्टूबर 2024 से 40त्न की वृद्धि दर्शाता है। कंपनी ने नेटफ्लिक्स, अैमेज़ॉन, सोनी और अन्य वैश्विक मीडिया दिग्गजों सहित प्रमुख स्टूडियो से हाई-प्रोफाइल प्रोजेक्ट हासिल किए हैं। उद्योग अंतर्दृष्टि और बाजार की गति;

- बढ़ता कंटेंट निवेश; नेटफ्लिक्स का कंटेंट खर्च 2025 में 18 बिलियन तक पहुंचने की संभावना है, जो उच्च गुणवत्ता वाले विजुअल इफेक्ट्स की निरंतर मांग को दर्शाता है।
- कर प्रोत्साहन से उत्पादन को बढ़ावा; ब्रिटिश कोलंबिया ने हॉलीवुड निर्माताओं को बड़ा तोहफा दिया है, जहां प्रमुख स्टूडियो और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के लिए 1 जनवरी 2025 से विदेशी फिल्म कर क्रेडिट को 28 प्रतिशत से बढ़ाकर 36 प्रतिशत कर दिया गया है।
- यू.के. फिल्म और हाई-एंड टीवी निवेश;2024 में लगभग 7 बिलियन तक पहुंच गया, जो हड़ताल प्रभावित 2023 की तुलना में 31त्न अधिक है।

मेधावी विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु डिजिटल आवेदन सेवा का शुभारंभ

भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के अग्रणी बैंकों में से एक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा (बैंक) ने आज मेधावी छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए नई प्रधानमंत्री विद्यालक्ष्मी (पीएम-विद्यालक्ष्मी) योजना को लाइव करने की घोषणा की। पीएम-विद्यालक्ष्मी योजना भारत सरकार की एक पहल है जो विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है और यह सुनिश्चित करती है कि वित्तीय बाधाओं के कारण भारत के युवा गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित न रहें।आवेदक बैंक ऑफ़ बड़ौदा से डिजिटल रूप से पीएम-विद्यालक्ष्मी पोर्टल के माध्यम से पीएम-विद्यालक्ष्मी योजना के तहत शिक्षा ऋण के लिए आवेदन कर सकते हैं। देश भर के छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बैंक के पास 8,300 से अधिक शाखाओं के अतिरिक्त 12 समर्पित शिक्षा ऋण स्वीकृति सेल (ईएलएससी) और 119 रिटेल आस्ति प्रोसेसिंग सेल (आरएपीसी) उपलब्ध हैं।

टाटा एआईए के टैक्स बोनान्ज़ा कंजम्पशन फंड से पाएं अधिकतम टैक्स राहत

मुंबई, हाल ही में केंद्र सरकार ने की हुई बजट घोषणा ने डिस्पोजेबल आय में उछाल के लिए मंच तैयार किया है, जिससे भारत में उपभोग में वृद्धि के लिए एक मजबूत एनेबलर तैयार हुआ है। नई कर व्यवस्था (वित्त वर्ष 26 से प्रभावी) में ?12.75 लाख तक की आय या वेतनभोगी व्यक्तियों पर शून्य कर देयता होने की वजह से भारतीय उपभोक्ताओं की खर्च करने की शक्ति बढ़ेगी, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में मांग बढ़ेगी। हमारी अर्थव्यवस्था के उपभोग-संचालित विकास की गति बढ़ेगी,

रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं ,रक्तदाता समाज को प्रेरणा देने का काम करते-चौहान

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष महिदपुर रोड के पोरवाल समाज के प्रमुख समाजसेवी स्व.अनोखीलाल फरक्या की तृतीय पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में युवाओं ने इस दौरान उपस्थित होकर रक्तदान किया।समारोह के मुख्य अतिथि बहादुरसिंह चौहान ने रक्तदाताओं को बधाई देते हुए कहा-आप समाज के युवाओं को प्रेरणा देने का कार्य करते हैं। समारोह में अतिथि के रूप में समाज के युवा संगठन के जितेन्द्र काला नगर पोरवाल ने कहा-पोरवाल समाज के युवा शोषित,पीड़ित,बीमार लोगों की

सहायता के लिये हर समय तत्पर रहते हैं।यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है। समाज अध्यक्ष शिवनारायण काला ने कहा- नगर के युवाओं का पूरे प्रदेश में समाज सेवा के लिये एक विशिष्ट स्थान है।नगर जैन समाज के समाजसेवी राजेश कांठेड़ ने कहा-पोरवाल समाज के साथ अन्य समाज के लोग युवा भी हमेशा प्रेरणा लेंगे,ऐसी मुझे उम्मीद है।काठेड ने इस दौरान स्व.अनोखीलाल फरक्या के समाज सेवा में योगदान का भी उल्लेख किया। रक्तदान शिविर के आयोजक संदीप,प्रतीक तथा सोमिल फरक्या ने बताया-नगर सहित आसपास के गांव से बड़ी संख्या में युवाओं ने रक्तदान किया।शिविर में रक्तदान करने वाले युवाओं का खून एकत्रित करने जिला चिकित्सालय उज्जैन की चलित वैन तथा चलित वैन पर रक्तदान शिविर में जाकर रक्त एकत्रित करने वाली स्वास्थ्य विभाग की टीम ने उपस्थित होकर रक्त दाताओं से रक्त एकत्रित किया।